दर्वीकर सर्प

रथांगलांगलच्छत्रस्वस्तिकांकुशधारिणः ।

ज्ञेया दर्वीकराः सर्पाः फणिनः शीघ्रगामिनः ।। (सु.क. 4/22)

- शिरोभाग (hood) पर रथांग (चक्रम्), लांगल (हल), छत्र, स्वस्तिक, अंकुश के सदृश निशान से युक्त ।
- फणयुक्त ।
- तेज भागने वाले ।

विचरण काल

दर्वीकर दिन में विचरण करते हैं

दंश के लक्षण

तत्र, दर्वीकरविषेण त्वङ्नयननखदशनवदनमूत्रपुरीष- दंशकृष्णत्वं रौक्ष्यं शिरसो गौरवं सन्धिवेदना कटीपृष्ठग्रीवादौर्बल्यं जृम्भणं वेपथुः स्वरावसादो घुघुरको जडता शुष्कोद्गारः कासश्वासौ हिक्का वायोरूर्ध्वगमनं शूलोद्वेष्टनं तृष्णा लालास्रावः फेनागमनं स्रोतोऽवरोधस्तास्ताश्च वातवेदना भवन्ति (सु.क 4/37)

1. त्वचा, आँखें, नाखून, दाँत, मुख, मूत्र, पुरीष और दंश (bite) का रंग कृष्णवर्ण (blackish discoloration) होना

2. शरीर में रूक्षता (dryness)

3. शिर में भारीपन (heaviness)

4. सन्धियों में वेदना (arthralgia)

5. कमर, पीठ और ग्रीवा में दुर्बलता (weakness in waist, back and neck)

6. जम्भाइयाँ आना (yawning)

7. शरीर में कम्प (tremors)

8. स्वरभंग (hoarseness of voice)

9. गले में घुर घुर शब्द होना (gurgling sound in neck)

10. शरीर का जकड़ जाना (stiffness)

11. सूखे डकार आना (dry belching)

12. कास (cough)

13. श्वास (dyspnea)

14. हिक्का (hiccough)

15. वायु का ऊपर की ओर गमन (misperistalsis)

16. शूल के कारण ऐंठन होना (cramps)

17. तृष्णा (thirst)

18. लालास्राव (salivation)

19. मुख से झाग आना (frothing through oral cavity)

20. स्रोतों का अवरोध (obstruction of bodily channels)

21. तोदन-भेदनादि वातवेदनाएँ (numerous types of pain / colic etc.)।